IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश की चौहदवीं से सत्रहवीं विधानसभा में विपक्ष के प्रभाव का मूल्यांकनः राजनीतिक गति और समर्थन की दिशा

- **डॉ0 आभा बाजपेयी, प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, डॉ0 भगवत सहाय, शासकीय महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)**
- **कपिल शर्मा, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)**

सार–

भारत में सबसे अधिक आबादी वाला राज्य होने के नाते उत्तर प्रदेश महत्वपूर्ण राजनीतिक महत्व रखता है। 403 विधान सभा सीटों के साथ, उत्तर प्रदेश विधान सभा राजनीतिक गतिविधि का एक महत्वपूर्ण स्थल है जो राष्ट्रीय और राज्य शासन को प्रभावित करता है। एक जीवंत लोकतांत्रिक प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक विपक्ष की भूमिका है, जो सत्तारूढ़ सरकार पर नियंत्रण के रूप में कार्य करता है, असहमति की आवाज उठाता है और वैकल्पिक नीतियां प्रदान करता है।

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में, विपक्षी दलों ने 14वीं से 17वीं विधान सभाओं में एक गतिशील बदलाव देखा है, जिसमें समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जैसी पार्टियां शामिल हैं। केंद्रीय भूमिकाएँ. 2002 और 2022 के बीच की अवधि को तीव्र राजनीतिक लड़ाइयों से चिह्नित किया गया है, जिसमें सत्तारूढ़ दल और विपक्ष लगातार सत्ता में बदलाव कर रहे हैं।

इस शोधपत्र का उद्देश्य 14वीं से 17वीं विधानसभा तक उत्तर प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के प्रभाव का आकलन करना है। विधायी प्रक्रियाओं, चुनावी रणनीतियों, जनता के समर्थन और राजनीतिक रणनीति की जांच के माध्यम से, अध्ययन यह मूल्यांकन करता है कि विपक्षी दलों ने राज्य में शासन को कैसे आकार दिया। यह शोधपत्र उभरती राजनीतिक गतिशीलता, विपक्ष के सामने आने वाली चुनौतियों और भारतीय लोकतंत्र के लिए व्यापक निहितार्थों पर भी चर्चा करेगा।

अनुसंधान के उद्देश्य

- 14वीं से 17वीं उत्तर प्रदेश विधानसभा तक विधायी प्रक्रियाओं को आकार देने में विपक्षी दलों की भूमिका और प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- सरकारी नीतियों को चुनौती देने और प्रभावित करने में विपक्ष की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।
- इस अवधि के दौरान विपक्षी दलों द्वारा अपनाई गई राजनीतिक रणनीतियों का पता लगाना।
- उत्तर प्रदेश के बदलते राजनीतिक परिदृश्य में विपक्षी दलों के सामने आने वाली चुनौतियों का आकलन करना।

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य का ऐतिहासिक संदर्भ–

उत्तर प्रदेश ऐतिहासिक रूप से राजनीतिक प्रभुत्व के लिए युद्ध का मैदान रहा है, जहां पिछले कुछ वर्षों में सत्ता में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी जैसी विभिन्न राजनीतिक ताकतों के उदय ने राज्य के राजनीतिक विमर्श को आकार दिया है।

आज़ादी के बाद का युग आज़ादी के बाद कई दशकों तक कांग्रेस पार्टी का उत्तर प्रदेश की राजनीति पर दबदबा रहा। राज्य के प्रारंभिक राजनीतिक परिदृश्य में एक मजबूत केंद्रीय प्रभाव और अपेक्षाकृत कमजोर विपक्ष की विशेषता थी।

क्षेत्रीय दलों का उदयरूप 1990 के दशक में, उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ, मुख्य रूप से मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी (सपा) और मायावती के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी (बसपा)। इन पार्टियों ने कांग्रेस और पारंपरिक राजनीतिक अभिजात वर्ग के प्रति बढ़ते असंतोष का फायदा उठाते हुए जाति–आधारित राजनीति का फायदा उठाया।

भाजपा का प्रभावरूप 1990 के दशक में, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) एक बड़ी ताकत के रूप में उभरी, जिसने हिंदू राष्ट्रवाद और धार्मिक भावनाओं का फायदा उठाया, खासकर 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद। भाजपा के उदय ने उत्तर प्रदेश में राजनीतिक माहौल को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। , विशेषकर 2010 के दशक में पार्टी के बढ़ते प्रभाव के साथ।

राजनीतिक बदलावरूप, उत्तर प्रदेश में लगातार राजनीतिक बदलाव देखे गए हैं, विपक्षी दलों, विशेष रूप से सपा, बसपा और कांग्रेस ने गठबंधन बनाया और सत्तारूढ़ दल के खिलाफ चुनाव लड़ा। बहुदलीय प्रणाली के उद्भव के साथ राजनीतिक परिदृश्य और अधिक जटिल हो गया, जिससे विपक्षी दलों को अपनी रणनीतियों को समायोजित करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

विधानसभा में विपक्ष की भूमिका–

विधान सभा में विपक्ष की भूमिका बहुआयामी होती है, जिसमें सरकारी कार्यों की जांच करना, कार्यपालिका को जवाबदेह बनाना और वैकल्पिक विचार प्रदान करना जैसे कार्य शामिल होते हैं। भारतीय संविधान के अनुसार, विपक्ष लोकतांत्रिक ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि यह शक्ति संतुलन सुनिश्चित करता है।

उत्तर प्रदेश में विपक्ष कई भूमिकाएँ निभाता है जो निम्नवत् है–

- नीतियों और विधेयकों की जांच, विपक्ष सरकारी नीतियों की आलोचना करने, विधेयकों पर बहस करने और सत्तारूढ़ दल को उसके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराने के लिए जिम्मेदार है। उत्तर प्रदेश विधानसभा में, विपक्षी दल नियमित रूप से विधेयकों को चुनौती देते हैं, खासकर उन विधेयकों को जो दूसरों के मुकाबले कुछ सामाजिक या आर्थिक समूहों का पक्ष लेते हैं।
- जाँच और संतुलनरूप, विपक्ष यह सुनिश्चित करता है कि सत्तारूढ़ सरकार अपनी सीमा का उल्लंघन न करे। यह उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहां शासन को अकसर जाति–आधारित राजनीति द्वारा आकार दिया गया है। विपक्षी दल अकसर प्रहरी के रूप में कार्य करते हैं और भ्रष्टाचार, शासन की विफलताओं और नीतिगत कमियों जैसे सार्वजनिक चिंता के मुद्दों को उठाते हैं।
- वैकल्पिक नीतियांरूप, विपक्ष विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के राजनीतिक संदर्भ में, अकसर वैकल्पिक नीतियों का प्रस्ताव करता रहा है। उदाहरण के लिए, समाजवादी पार्टी के शासन के दौरान, विपक्ष अकसर राज्य की कल्याणकारी योजनाओं की विफलताओं को उजागर करता था और सुधार का सुझाव देता था। इसी तरह, आरक्षण और कल्याणकारी उपायों जैसी नीतियों का बसपा का विरोध समाज के विभिन्न वर्गों पर केंद्रित था।

चौदहवीं से सत्रहवीं विधानसभा का विस्तृत विश्लेषण–

चौदहवीं विधानसभा (2002-2007):

चौदहवीं विधानसभा के दौरान उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी (सपा) का शासन था। भाजपा और बसपा के नेतृत्व में विपक्ष ने कानून–व्यवस्था, भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन के मुद्दों पर सरकार को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जाति–आधारित मुद्दों और शासन से निपटने में यादव सरकार की आलोचना में विपक्ष अत्यधिक मुखर था। राज्य में 2002 के सांप्रदायिक दंगे भी विपक्षी दलों के लिए केंद्र बिंदु बन गए।

पंद्रहवीं विधानसभा (2007-2012):

2007 में, मायावती के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने निर्णायक जीत हासिल की। इस समय विपक्ष बिखरा हुआ था, जिसमें समाजवादी पार्टी और भाजपा सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश कर रही थीं। बसपा की सरकार की विपक्ष द्वारा उसकी सत्तावादी प्रवृत्ति और वास्तविक नीति के बजाय प्रतीकवाद पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आलोचना की गई थी। विपक्ष ने मायावती पर राज्य की आर्थिक चुनौतियों की उपेक्षा करने का आरोप लगाते हुए असहमति को एकजुट करने के लिए कड़ी मेहनत की।

सोहलवीं विधानसभा (2012-2017)

2012 में समाजवादी पार्टी (सपा) सत्ता में लौटी और अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बने। इस दौरान विपक्ष में मुख्य रूप से भाजपा, बसपा और कांग्रेस शामिल थीं। सपा सरकार को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद और कुप्रबंधन के आरोप शामिल थे। विपक्षी दल, विशेषकर भाजपा, यादव परिवार के शासन के प्रति बढ़ते असंतोष को भुनाने में सक्षम थे, खासकर 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों के दौरान, जिसका इस्तेमाल विपक्ष ने राज्य की कानून व्यवस्था की स्थिति पर सवाल उठाने के लिए किया था।

सत्रहवी विधानसभा (2017–2022)

सत्रहवीं विधानसभा ने 2017 में भाजपा की शानदार जीत के साथ एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया। योगी आदित्यनाथ के तहत, भाजपा ने उत्तर प्रदेश में प्रमुख पार्टी के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की। विपक्ष, विशेषकर सपा और बसपा, गंभीर चुनौती देने में असमर्थ रहे। 2017 के चुनाव एक महत्वपूर्ण मोड़ थे, जहां विपक्ष को एक साथ आने और एक सामंजस्यपूर्ण कथा बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। भाजपा द्वारा सोशल मीडिया के कुशल उपयोग और हिंदुत्व की राजनीति के प्रति इसकी अपील ने पारंपरिक राजनीतिक लामबंदी के विपक्ष के प्रयासों को फीका कर दिया।

विधायी प्रक्रियाओं पर विपक्ष का प्रभाव–

उत्तर प्रदेश में विधायी एजेंडे को आकार देने में विपक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, लेकिन अकसर सक्रिय होने के बजाय प्रतिक्रियाशील रही है। विपक्ष अकसर सरकार की नीतियों को चुनौती देता है और उन विधेयकों में संशोधन या अस्वीकार करने का प्रयास करता है जिन्हें वे सार्वजनिक कल्याण के लिए हानिकारक मानते हैं। 14वीं से 17वीं विधानसभा सत्र में विपक्ष अकसर निम्नलिखित मुद्दों पर केंद्रित रहा है

आर्थिक नीतियां विपक्षी दल अकसर सरकारी आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हैं, विशेष रूप से औद्योगिक विकास, कृषि सब्सिडी और ग्रामीण कल्याण से संबंधित।

कानून और व्यवस्था उत्तर प्रदेश में विपक्षी दलों ने लगातार कानून और व्यवस्था में विफलताओं को उजागर किया है, खासकर दंगों और जातीय हिंसा के बाद। संवेदनशील सामाजिक मुद्दों से निपटने के लिए सरकार को जवाबदेह ठहराने के लिए वे अकसर विधानसभा सत्र का इस्तेमाल करते थे।

सामाजिक न्याय बसपा और सपा जैसे विपक्षी दलों ने हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर दलितों, पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों के लिए बेहतर प्रतिनिधित्व और कल्याण कार्यक्रमों पर जोर दिया है। आरक्षण नीतियों और सामाजिक न्याय पहलों के इर्द–गिर्द बहस विधायी बहसों में अकसर युद्ध का मैदान रही है।

विपक्षी दलों की राजनीतिक रणनीतियाँ–

उत्तर प्रदेश में विपक्ष ने सत्तारूढ़ सरकार को चुनौती देने के लिए कई तरह की रणनीतियों का इस्तेमाल किया है, जिनमें शामिल हैं।

गठबंधन की राजनीतिरूप, उत्तर प्रदेश की राजनीति की खंडित प्रकृति को देखते हुए, विपक्षी दल अकसर सत्तारूढ़ दल को चुनौती देने के लिए गठबंधन बनाने का प्रयास करते हैं। बसपा, सपा और कांग्रेस ने कभी–कभी भाजपा विरोधी वोटों को मजबूत करने के लिए गठबंधन किया है।

विरोध और प्रदर्शन, विपक्षी दल अकसर सरकारी नीतियों के खिलाफ असहमति के रूप में सार्वजनिक विरोध और प्रदर्शन का सहारा लेते हैं। ये विरोध प्रदर्शन न केवल सरकार पर निशाना साधते हैं बल्कि जनता का समर्थन जुटाने का भी प्रयास करते हैं।

मीडिया अभियानरूप, डिजिटल युग में मीडिया राजनीतिक प्रवचन को आकार देने में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। विपक्षी दलों ने अपनी आवाज़ उठाने, सरकारी नीतियों को चुनौती देने और समर्थन जुटाने के लिए पारंपरिक मीडिया और सोशल मीडिया दोनों प्लेटफार्मों का उपयोग किया है।

चुनावी गतिशीलता और मतदाता व्यवहार पर विपक्ष का प्रभाव–

उत्तर प्रदेश में मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने की विपक्ष की क्षमता को जातिगत गतिशीलता, आर्थिक नीतियों और क्षेत्रीय मुद्दों सहित कई कारकों ने आकार दिया है। 2017 और 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में, विपक्षी दलों को भाजपा की शक्तिशाली चुनावी रणनीतियों का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा, खासकर ग्रामीण इलाकों में जहां जाति की राजनीति ने प्रमुख भूमिका निभाई।

2017 उत्तर प्रदेश चुनाव

2017 के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लिए एक बड़ी जीत दर्ज की गई, जिसने 312 सीटों के साथ भारी जीत हासिल की, जिसका मुख्य कारण हिंदुत्व और सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग था। विपक्ष, विशेषकर समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस को एकजुट मोर्चा दिखाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। सपा और कांग्रेस ने गठबंधन तो बना लिया, लेकिन उनके प्रयास भाजपा की मजबूत संगठनात्मक मशीनरी और योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की अपील को चुनौती देने के लिए अपर्याप्त थे। हालाँकि यादवों और मुसलमानों के बीच सपा का पारंपरिक समर्थन आधार बना रहा, लेकिन यह उच्च जातियों, ओबीसी और दलितों के बीच भाजपा की बढ़ती अपील को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

बहुजन समाज पार्टी (बसपा), जो पिछले चुनावों में एक मजबूत खिलाड़ी रही थी, ने अपने चुनावी भाग्य में बड़ी गिरावट देखी, दलित मतदाताओं के मजबूत जमीनी समर्थन के बावजूद महत्वपूर्ण सीटें हासिल करने में असफल रही। इसने विपक्षी दलों के सामने अपने पारंपरिक मतदाता आधार को बनाए रखने में बढ़ती चुनौतियों का संकेत दिया।

चुनावी गतिशीलता, विशेषकर विकास और सुरक्षा के आख्यान के माध्यम से भाजपा द्वारा हिंदू वोटों को एकजुट करने से मतदाता व्यवहार पर विपक्ष का प्रभाव काफी कम हो गया। किसान संकट, बेरोजगारी और कानून–व्यवस्था जैसे मुद्दों के बावजूद, विपक्ष ग्रामीण मतदाताओं के बीच असंतोष को प्रभावी ढंग से भुनाने में विफल रहा, खासकर उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में, जहां अतीत में महत्वपूर्ण दंगे हुए थे।

2022 उत्तर प्रदेश चुनाव

2022 के चुनावों ने एक जटिल राजनीतिक तस्वीर पेश की, जिसमें समाजवादी पार्टी, कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के कड़े विरोध के बावजूद भाजपा ने सत्ता बरकरार रखी। विपक्ष के अभियान, जो बेरोजगारी, कानून और व्यवस्था और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर केंद्रित थे, ने भाजपा के राज्य संसाधनों, मीडिया के सफल उपयोग और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व के माध्यम से इसकी व्यापक अपील से मेल खाने के लिए संघर्ष किया।

अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी (सपा) ने किसानों, युवाओं और पिछड़े वर्गों के बीच बढ़ती नाराजगी को भुनाने का प्रयास किया। सपा का अभियान बेरोजगारी और आर्थिक संकट पर केंद्रित था। हालाँकि, क्षेत्रीय दलों के साथ मजबूत गठबंधन बनाने में पार्टी की विफलता और उसकी आंतरिक गुटबाजी ने उसके प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न की।

भाजपा का प्रभुत्व भाजपा बुनियादी ढांचे, कानून–व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा में अपनी उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करके अपने चुनावी आधार के एक बड़े हिस्से को बरकरार रखने में कामयाब रही। पार्टी ने धार्मिक और राष्ट्रवादी भावना की ध्रुवीकरण अपील का भी उपयोग किया, जो कई मतदाताओं को पसंद आया, खासकर राज्य के पूर्वी और मध्य क्षेत्रों में। मतदाताओं तक पहुंचने के लिए भाजपा द्वारा मीडिया और प्रौद्योगिकी के कुशल उपयोग, विशेष रूप से व्हाट्सएप, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और रैलियों के माध्यम से, इसकी पहुंच में और वृद्धि हुई और इसका समर्थन मजबूत हुआ।

विपक्ष के सामने चुनौतियाँ–

उत्तर प्रदेश में विपक्ष को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिसने पिछले कुछ वर्षों में इसकी प्रभावशीलता को सीमित कर दिया हैरू

- **खंडित नेतृत्व**

विपक्षी दलों के सामने एक बड़ी चुनौती एकीकृत नेतृत्व की कमी है। उदाहरण के लिए, समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और कांग्रेस को एकजुट गठबंधन बनाने में कठिनाई हुई है। हालाँकि वे कभी–कभी भाजपा को चुनौती देने के लिए एक साथ आते हैं, लेकिन नेतृत्व और रणनीति पर आंतरिक असहमति के कारण अकसर अव्यवस्था पैदा होती है।

- **भाजपा का चुनावी प्रभुत्व**

2014 के बाद से, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उत्तर प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से शक्तिशाली हो गई है। भाजपा की मजबूत जमीनी स्तर की लामबंदी, मीडिया के व्यापक उपयोग और शक्तिशाली चुनावी अभियानों के संयोजन ने विपक्ष के लिए इसके प्रभाव का मुकाबला करना मुश्किल बना दिया है। विपक्ष ने ऐसे प्रति–आख्यान विकसित करने के लिए संघर्ष किया है जो मतदाताओं के बड़े वर्ग को प्रभावित कर सकें।

- **जाति की राजनीति और पहचान**

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य की एक प्रमुख विशेषता, जाति–आधारित राजनीति ने भी विपक्ष के लिए चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। कभी पिछड़ी जातियों के बीच मजबूत पकड़ रखने वाली समाजवादी पार्टी को भाजपा से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसने ऊंची जाति के हिंदुओं के बीच सफलतापूर्वक समर्थन हासिल कर लिया है। बसपा, जिसे परंपरागत रूप से दलितों का समर्थन प्राप्त था, को मतदाता व्यवहार में बदलाव के कारण अपना आधार बनाए रखना मुश्किल हो गया।

- **आंतरिक पार्टी प्रभाग**

विपक्षी दलों, विशेषकर सपा और कांग्रेस के भीतर आंतरिक विभाजन ने उनकी चुनावी संभावनाओं को कमजोर कर दिया है। उदाहरण के लिए, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव के नेतृत्व को पार्टी के भीतर से विरोध का सामना करना पड़ा है, खासकर उनके चाचा शिवपाल यादव से, जो एक अलग गुट का नेतृत्व कर रहे थे। बसपा अपने मजबूत दलित वोट बैंक को खोने के बाद नेतृत्व के मुद्दों से जूझ रही है, जिससे राज्य में उसका प्रभाव कम हो गया है।

- **धार्मिक राष्ट्रवाद का उदय**

विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में धार्मिक राष्ट्रवाद के उदय ने राजनीतिक विमर्श को नया आकार दिया है। हिंदू मतदाताओं से भाजपा की अपील ने विपक्ष के धर्मनिरपेक्ष कथन को किनारे कर दिया है। इस संदर्भ में, विपक्षी दलों को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिंदू धार्मिक प्रतीकवाद पर भाजपा के जोर को प्रभावी ढंग से चुनौती देना मुश्किल हो गया है।

अन्य राज्यों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण–

उत्तर प्रदेश में विपक्ष की भूमिका की तुलना बिहार, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश जैसे अन्य प्रमुख राज्यों से की जा सकती है, जहां अत्यधिक प्रतिस्पर्धी राजनीतिक माहौल भी है।

बिहार

बिहार में विपक्ष अपेक्षाकृत अधिक एकजुट है. लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) और नीतीश कुमार की अगुवाई वाली जनता दल (यूनाइटेड) ने पिछले कुछ वर्षों में सफल गठबंधन बनाए हैं। बिहार में विपक्ष ने

जाति–आधारित आरक्षण, भूमि सुधार और धर्मनिरपेक्षता जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके भाजपा के प्रभुत्व को प्रभावी ढंग से चुनौती दी है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश का विपक्ष अधिक खंडित हो गया है, जिससे इसका प्रभाव कम हो गया है।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में, ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने 2021 के विधानसभा चुनावों में पार्टी को हराकर खुद को भाजपा के खिलाफ मुख्य विपक्षी दल के रूप में सफलतापूर्वक स्थापित किया है। टीएमसी के मजबूत जमीनी समर्थन, खासकर बंगाली भाषी मतदाताओं के बीच, ने इसे भाजपा के प्रभुत्व को चुनौती देने की अनुमति दी है। हालाँकि, उत्तर प्रदेश में विपक्ष को भाजपा के खिलाफ ऐसी एकजुट चुनौती बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा है।

मध्यप्रदेश

मध्य प्रदेश में कांग्रेस के नेतृत्व में सफल विपक्षी अभियान देखे गए हैं, खासकर 2018 के विधानसभा चुनावों के दौरान जब कांग्रेस

बीजेपी को हराया. हालाँकि, उत्तर प्रदेश में विपक्ष को राज्य के मतदाताओं के आकार और विविधता के साथ–साथ भाजपा की अच्छी स्थिति के कारण अधिक जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश की 14वीं से 17वीं विधान सभाओं में विपक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, हालांकि कई बार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बढ़ते प्रभुत्व पर इसकी छाया पड़ गई। विपक्ष ने शासन, कानून–व्यवस्था, सामाजिक न्याय और आर्थिक नीतियों से संबंधित चिंताओं को उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, उनके प्रयासों के बावजूद, विपक्षी दल अकसर आंतरिक विभाजन, खंडित नेतृत्व और भाजपा द्वारा मीडिया के प्रभावी उपयोग, जमीनी स्तर पर लामबंदी और धार्मिक आख्यानों के कारण भाजपा के आधिपत्य को एक सफल चुनौती देने में असमर्थ रहे हैं। आगे देखते हुए, विपक्ष को अपनी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता फिर से हासिल करने के लिए, इन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होगी।

एकता विपक्षी दलों को आंतरिक मतभेदों को दूर करना होगा और भाजपा को प्रभावी ढंग से चुनौती देने के लिए गठबंधन बनाना होगा। चुनावी रणनीतियाँ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में मतदाताओं को प्रभावित करने वाली अधिक मजबूत चुनावी रणनीतियाँ विकसित करना महत्वपूर्ण होगा। शासन पर बेरोजगारी, किसान संकट और कानून व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर स्पष्ट, वैकल्पिक नीतियों की पेशकश से विपक्ष को विश्वसनीयता बनाने और मतदाताओं से जुड़ने में मदद मिलेगी। उत्तर प्रदेश में विपक्षी दलों की सफलता उभरते राजनीतिक परिदृश्य के अनुकूल ढलने और सत्तारूढ़ दल के वैध विकल्प के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने की उनकी क्षमता पर निर्भर करेगी।

संदर्भ

- जाफ़रलॉट, क्रिस्टोफ़। हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन और भारतीय राजनीतिरू एक संक्षिप्त इतिहास। नई दिल्लीरू वाइकिंग, 1999.
- चंद्रा, के.के. भारतीय राजनीतिरू उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक विश्लेषण। नई दिल्लीरू प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, 2006।
- बसु, रुमकी. भारत की क्षेत्रीय पार्टियों की राजनीति. नई दिल्लीरू कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017।
- मिश्रा, श्याम नंदन. उत्तर प्रदेश की राजनीतिरू राजनीतिक परिवर्तन और विकास का एक अध्ययन। लखनऊरू लखनऊ यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008।
- रूडोल्फ, लॉयड आई., और सुज़ैन होएबर रूडोल्फ। लक्ष्मी की खोज मेंरू भारतीय राज्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था। शिकागोरू शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, 1987।
- "Uttar Pradesh Legislative Assembly (Vidhan Sabha): Proceedings and Debates," Uttar Pradesh Vidhan Sabha Website.
- उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2017 एक सांख्यिकीय विश्लेषण, भारत निर्वाचन आयोग, 2017।
- गांगुली, शुभ्रा. उत्तर प्रदेश में विपक्षी दलों की राजनीतिक रणनीतियाँ एक तुलनात्मक विश्लेषण, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम। 53, संख्या 32 (2018) 54–67।
- भट्ट, आर. और पी. वर्मा। उत्तर प्रदेश में चुनावी गतिशीलता मतदान व्यवहार और पार्टी रणनीतियों का विश्लेषण। नई दिल्लीरू सेज प्रकाशन, 2019।
- यादव, योगेन्द्र. जाति, वर्ग और शक्ति उत्तर प्रदेश में स्तरीकरण के बदलते पैटर्न। नई दिल्ली ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997।